A-PDF Image To PDF Demo. Purchase from www.A-PDF.com to remove the watermark

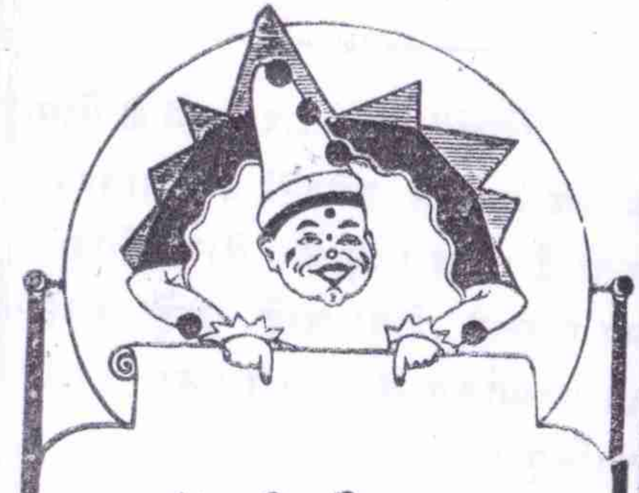

हँसी खेल

[ले० पं० सुदर्शनाचार्य्य बी० ए०]

इस पुस्तक में बालक-बालिकाओं के लिये हँसी खेल का पूरा सामान है। इसी से इसका नाम 'हँसी खेल' रक्खा गया है। इसमें रङ्ग विरङ्गे ८२ चित्रों से चित्रित छोटे छोटे ६० लेख और कविताएँ हैं। सभी विषय हँसाने वाले हैं। बालक इनको पढ़ कर हँसते हँसते लोट पोट हो जायँगे। एक बार देख कर बालक फिर इसे नहीं छोड़ते। इसका कवर भी बड़ा सुन्दर है। मूल्य केवल बारह आना है। 'शिशु' के ग्राहकों से नौ आना।

SHISHU

[...ास्त १९२६] [प्रथम अङ्क

[...िक मूल्य २] [इस अङ्क का ≡)

सम्पादक

पण्डित सुदर्शनाचार्य्य बी० ए०

सहायक सम्पादक—श्रीनाथसिंह

...gle Copy Three Ann...

आप भी अपनी तसवीर 'शिशु' में छपवाइए

'शिशु' में प्रति मास दो चार सुन्दर बालकों की तस्वीर छपती हैं। यदि आप बच्चे हैं अर्थात् आप की उम्र १० वर्ष की या इससे कम की है और आप अपनी तस्वीर इसमें छपवाना चाहते हैं तो शीघ्र ही अपनी एक अच्छी सी फोटो भेजिये या अपने किसी छोटे भाई या बहिन की भेजिये। जिसकी फोटो सब से बढ़िया होगी उसको इनाम भी मिलेगा।

तस्वीर भेजने का पता—

पं० सुदर्शनाचार्य्य बी० ए०,
'शिशु'-कार्य्यालय, इलाहाबाद।

The "Shishu"

THE PREMIER HINDI MONTH

CHILDREN IN INDI

OFFICIALL

Recommended & Approved

for use in

...raries & Reading Rooms of Vernacular and Anglo Vernacular Schools in the Punjab, United Provinces, Central Provinces & Berar, & Kotah State etc.

विषय-सूची

जुलाई सन् १९२६

(१) बाल विनय (पद्य)—[ले०, श्री० 'श्रीश'] … [illegible]
(२) राजा बेटी—[ले०, श्रीमती गोपाल देवी] … [illegible]
(३) चन्द (पद्य)—[ले०, पं० अयोध्या सिंह उपाध्याय] [illegible]
(४) घर की मक्खी—[ले०, श्री राधाकृष्ण बी० ए०] [illegible]
(५) लल्ला का रोना (पद्य)—[ले०, पं० देवी दत्त शुक्ल सं० 'सरस्वती'] … [illegible]
(६) प्रातःकाल का व्यायाम (पद्य)—[ले०, श्री० जीवेन्द्र बहादुर सिंह] … [illegible]
(७) हमारी चित्रावली … … … … [illegible]
(८) खेल तमाशा … … … … [illegible]
(९) बालू में छिपा शहर … … … … [illegible]
(१०) चूरन का लटका (पद्य)—[ले०, श्री विद्याभूषण 'विभु'] … … [illegible]
(११) सेनापति हनीबल—[ले, श्री० विश्व प्रकाश विशारद] … [illegible]
(१२) सिंह और घड़ियाल (पद्य)—[ले०, श्री० 'बालक कवि'] … [illegible]
(१३) अँगूठी का जादू—[ले०, श्री० अमृत लाल मुकर्जी] [illegible]
(१४) मधु मक्खी (पद्य)—[ले०, श्री गुलाबराय एम० ए०, एल० एल० बी०] … [illegible]
(१५) तिलकाष्ठमहिषबन्धन—[ले०, श्री० जे० कृष्ण-मूर्त्ति] … … … [illegible]
(१६) क्रोध (पद्य)—[ले०, श्री० रामेश्वर प्रसाद गुरु] [illegible]
(१७) चुटकुले … … … … [illegible]
(१८) चिट्ठी चपाती … … … … [illegible]
(१९) अनोखी बात … … … … [illegible]
(२०) बाल समाचार … … … … [illegible]
(२१) नई पहेलियाँ … … … … [illegible]

शिशु

की

पुरानी फाइल

सन् १९२४ की फाइल तैयार है। मूल्य
साधारण जिल्द … … … २)

मिलने का पता—मैनेजर 'शिशु', इलाहाबाद।

ग्राहकों को चाहिए

कि जब किसी प्रकार का पत्र व्यवहार किया करें, तो कृपा कर अपना ग्राहक नम्बर और पूरा पता अवश्य लिख दिया करें। बिना ग्राहक नम्बर के लिखे हुए इतने ग्राहक समूह में उनका पता लगाना कठिन हो जाता है क्योंकि एक नाम के कई कई ग्राहक हैं।

पता बदलवाने की चिट्ठी लिखते समय अपना पुराना और नया दोनों पते और ग्राहक नम्बर भी लिखना चाहिए। ग्राहक नम्बर हर हालत में लिखना ज़रूरी है।

मैनेजर, "शिशु" इलाहाबाद।

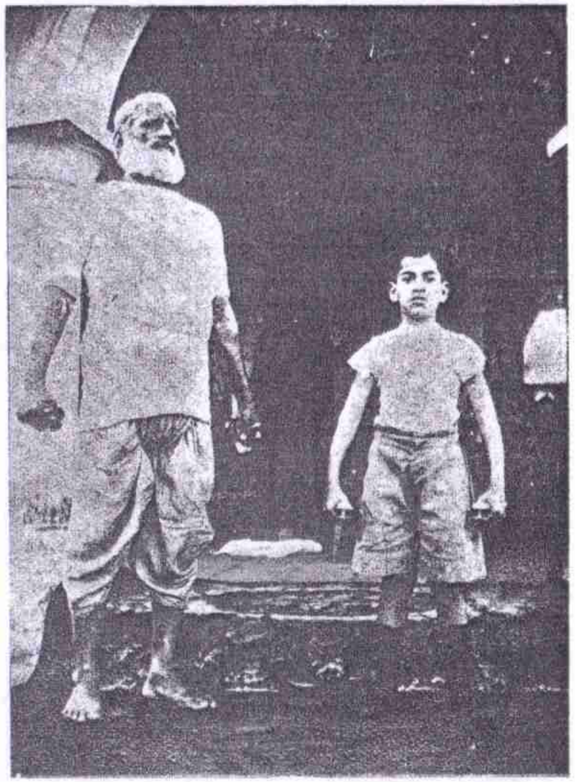

पं० सुखराम चौबे
(विद्या-गुरु)

श्री जीवेन्द्रनाथ बहादुरसिंह
राज-कुमार
शक्ति ।

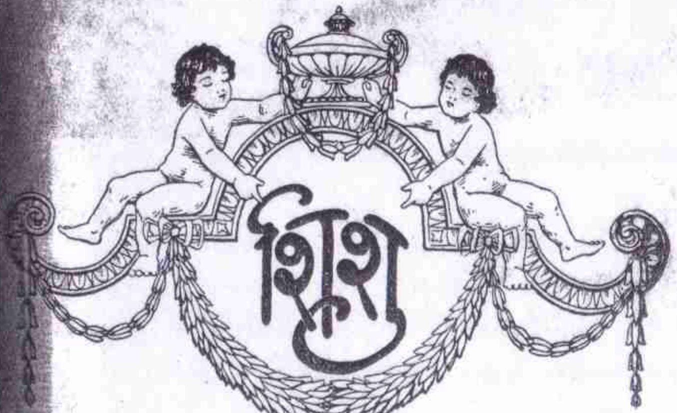

पढ़ो, बढ़ो भारत-सन्तान । हृदय धरो माता का ध्यान ॥
तुम हीं पर आशा है सारी । मुख निरखे भारत महतारी ॥

कादश वर्ष } प्रयाग, अगस्त १९२६ { अष्टम अङ्क

बाल विनय

बहुत मैं तुमसे पाता हूँ ।
तुम्हें कुछ देने लाता हूँ ॥

सुनता हूँ हो बिना हाथ के,
ले लो मेरे हाथ ।
उनके द्वारा जो चाहो सो,
करो जगत में नाथ !

माथ मैं तुम्हें झुकाता हूँ ।
तुम्हें कुछ देने लाता हूँ ॥

सुनता हूँ हो बिना पैर के,
ले लो मेरे पैर ।
उनके द्वारा जब चाहो तब,
करो जगत की सैर ॥

गैर के पास न जाता हूँ ।
तुम्हें कुछ देने लाता हूँ ॥

सुनता हूँ हो बिना गात के,
ले लो मेरे गात ।
जिसको चाहो उसको दर्शन,
दिया करो दिन रात ॥

बात हित की बतलाता हूँ ।
तुम्हें कुछ देने लाता हूँ ॥

यानी अपनी इच्छा की लो,
बना मुझे तसवीर ।

सेवा करूँ तुम्हारे जग की,
जब तक रहे शरीर ॥

तीर सा दौड़ा आता हूँ ।
तुम्हें कुछ देने लाता हूँ ॥

—'श्रीश'।

राजा बेटी

अन्धेर नगरी अनबूझ राजा ।
टके सेर भाजी टके सेर खाजा ॥

अन्धेर नगरी का राजा अपने महल की छत पर से सड़क की ओर देख रहा था । उसी समय उसने राह में किसी लड़के को ऊपर लिखा हुआ गाना गाते सुना ।

"अ-ह-ह-ह-ह-हा !" राजा बड़े जोर से हँसा और मन ही मन कहने लगा—"मुझे याद है, एक बार मैंने बाजार में टके सेर भाजी और टके सेर खाजा बिकने का हुक्म दिया था । उस बात को लेकर इस लड़के ने खूब गीत गाया । मुझे

मालूम ही न था कि मेरे कामों से लोग इतने खुश हैं कि गीत गा गा कर उनकी याद किया करते हैं। अच्छा, अब मैं कोई और अनोखा काम करूँगा जिससे और भी ऐसे गीत सुनने में आवें।"

उस दिन से राजा रोज नये नये बेवकूफी के काम करने लगा। कभी वह हाथ में जूता लेकर बैल पर चढ़ता और कभी अपने सारे शरीर में राख मलता। अपने इन कामों से वह नये गाने सुनने की इच्छा रखता पर लोगों ने उसकी इन बेवकूफियों पर ध्यान न दिया। एक दिन सभा करके उसने मंत्रियों से इसका कारण पूछा तो मंत्रियों ने कहा—"हुजूर! ये सब काम तो महादेव जी कर चुके हैं अतएव ये नये नहीं हैं।" यह सुन कर राजा कोई नया काम सोचने लगा। मंत्रियों ने घबरा कर आपस में कानाफूसी की—"देखें, अब राजा साहब क्या करते हैं? इस राज में रहना तो बड़ी आफत है।"

बहुत दिनों तक राजा को कोई नया बेवकूफी का काम न सूझा। पर अपने कामों की

तारीफ में वह गीत सुनने के लिये इतना चाह रहा था कि एक दिन खुद ही गीत बनाने बैठा। पर उससे गीत भी न बना। उसने कागज के टुकड़े टुकड़े कर दिये और पेंसिल एक मंत्री की आँख में घुसेड़ दी। राजा गुस्से में उठा और सबसे ऊपर की छत पर चला गया। वहाँ से उसने देखा कि चारों तरफ सड़कों पर बड़ी भीड़ है। कोई आ रहा है कोई जा रहा है।

राजा ने सोचा—"इस प्रकार तो हमारी सड़कें नष्ट हो जायँगी। अगर किसी आदमी के ऊपर लोग चलने लगें तो बेचारा दब कर मर जा सकता है। हाय! हाय! बेचारी सड़कें भी दब कर मर जायँगी।"

बस वह भागा हुआ फिर नीचे आया। काना मंत्री अपनी आँख दबाए बैठा था। राजा बोला—"कोई परवाह नहीं, अभी तुम्हारी एक आँख ठीक है। अभी तुम मेरा काम कर सकते हो। लिखो, मैं जो बोलता हूं फौरन लिखो।"

काने मंत्री ने कागज सामने रक्खा और पेंसिल हाथ में ली। राजा बोलने लगा—

हुक्म नं० १

"अन्धेर नगरी के लोगों को हुक्म दिया जाता है कि आज से हमारी सड़कों पर कोई न चले। जो इस हुक्म को नहीं मानेगा उसे फौरन फाँसी दी जायगी।"

काना मंत्री अपनी एक आँख से टकटकी बाँध कर राजा को देखने लगा। राजा ने कहा—"तुम समझते होगे मैं लोगों का चलना बन्द कर रहा हूँ। तुम्हारी अक्ल ही है। कागज की ओर देखो और दूसरा हुक्म लिखो।"

हुक्म नं० २

"अब लोगों को घर से बाहर आने जाने के लिए यही उपाय है कि वे एक घर की छत से दूसरे घर की छत पर लकड़ी के लम्बे तख्ते रक्खें और उन पर चलें।"

दूसरे दिन सारे शहर में ढिंढोरा पिट गया और राजा के दोनों हुक्म दरवाजे दरवाजे पर पढ़ कर सुना दिये गये।

लोग घरों में सब दिन बैठ नहीं सकते।

घर से बाहर न निकलें तो खायँ क्या। लाचार होकर उन्हें एक घर की छत से दूसरे घर की छत पर तख्ते लगाने पड़े। औरत, मर्द, बुड्ढे, बच्चे, सब डरते और काँपते हुए तख्तों पर चलने लगे। कितने ही लोग तो डगमगा कर नीचे आ गिरे। पर उन्हें उठाने कौन जाय? लाशें सड़ने लगीं। सारी अन्धेर नगरी में त्राहि त्राहि मच गई।

राजा ने अपने नौकरों से कहा—"मुझे कुर्सी में बैठाल कर तख्ते तख्ते नगर से बाहर जो शिवाला है उस पर ले चलो।"

तख्तों का रास्ता बनाया गया और राजा शिवाले की चोटी पर जा बैठा। वहाँ से बोला—"यदि कोई मुझे बिना सीढ़ी लगाए शिवाले से नीचे उतार ले तो जो वह कहे मैं वही करूँ।"

किसी को न सूझा कि क्या करना चाहिए। तब एक बड़ी सुन्दर छोटी सी लड़की आई। वह अपने साथ एक बड़ी सी रस्सी और एक डलिया लाई। रस्सी के एक सिरे को उसने शिवाले के

त्रिशूल पर फेंका और दूसरे से झटका दे दे कर उसे नीचे उतार लिया। फिर उसने एक सिरे में टोकरी बाँध दूसरे को खींचा। टोकरी राजा के पास पहुँच गई। उसी में बैठ रस्सी के ढील पाने पर वह नीचे आगया। अब उसने कहा—"तुमसे मैं बहुत खुश हूँ। इस लिये तुम्हें अपनी रानी बनाऊँगा।" लड़की बोली—"मैं जो कहूँ आप को वही करना होगा। क्योंकि आप बात हार चुके हैं।" राजा बोला—"अच्छा कहो।" लड़की बोली —"तुम सिंहासन खाली करदो उस पर मैं बैठूँगी। तुम रनवास में रानियों के साथ रहो। अब राज काज में तुमसे कोई मतलब नहीं। मैं जैसे चाहूँगी उसे चलाऊँगी।"

लड़की की चालाकी सुन कर राजा अवाक रह गया। पर करता क्या? बात हार चुका था। उसे लड़की की बात माननी पड़ी।

सिंहासन पर बैठते ही लड़की ने सारे तख्ते तुड़वा दिये। लोगों को सड़कों पर आजादी से चलने फिरने की आज्ञा दी और बड़ी बुद्धिमानी से राज करने लगी।

राजा रानियों में रहते रहते एक तरह की रानी ही बन गया। धीरे धीरे वह नाचने गाने और कपड़ों पर बेल बूटे काढ़ने लगा। उस लड़की को लोग 'राजा बेटी' कहने लगे और इसी नाम से वह राज करने लगी।

इसके बहुत दिन बाद राजा ने एक गीत फिर सुना। वह यह था—

राजा बेटी, राजा बेटी।
बेटी राजा, राजा बेटी॥

इसका मतलब यह था—"राजा लड़की बन गया, राजा लड़की बन गया। लड़की राजा हुई और राजा लड़की बन गया।"

—गोपाल देवी।

चन्द

चौपदे

मेरा प्यारा चन्द खेलौना।
लिये गोद में है मृग छौना॥
है वह दूध कटोरे जैसा।
सुन्दर फूले कमलों ऐसा॥ १॥

माखन मेवे मुझे खिलाता।
है वह मिसरी घोल पिलाता॥
कभी हँसाता कभी रिझाता।
कभी अनूठे रस बरसाता॥ २॥

उसे देख कोंईं खिलती है।
गले चाँदनी से मिलती है॥
रात निखर बनती है आला।
पहन सजी मोती की माला॥ ३॥

धरती जगी जोत है पाती।
दिसा बिहँसती है दिखलाती॥
पौधे फूले नहीं समाते।
प्यारी फबन फूल हैं पाते॥ ४॥

मेरे पास चन्द! तू आजा।
आकर अपना खाजा खाजा॥
सच्चा प्यार मुझे दिखला जा।
मीठी मीठी बात सुना जा॥ ५॥

—अयोध्यासिंह उपाध्याय

घर की मक्खी

मक्खी कई तरह की होती हैं। साधारण तौर से हम एक ही तरह की मक्खी देखते हैं। यह प्रायः हर जगह और हर समय पाई जाती है। इसको हम 'घर की मक्खी' भी कहते हैं। बर्रे (ततइया) और शहद की मक्खी की तरह दो पर वाले कीटों में इसकी भी गिनती है।

यह कूड़े कर्कट में अण्डे देती है। अण्डों में से १५ दिन बाद बच्चे पूरी मक्खियाँ होकर निकलते हैं। मक्खी बड़ी गन्दी होती है। इसके पैर हमेशा गन्दी चीजों से लदे होते हैं। बीमारी फैलाने में यह बड़ी मदद करती है। किसी भी रोग के कीटाणु (कीड़े) इसके पैर में लग कर एक जगह से दूसरी जगह पहुँच जाते हैं। साफ सुथरी जगह में यह नहीं रहती। इससे सदा बचना चाहिये और अपनी सब चीजें हमेशा साफ सुथरी रखनी चाहिये।

बरसात में मक्खियाँ बहुत बढ़ जाती हैं। इन्हीं दिनों में ये अण्डे देती हैं। गर्मी में गर्मी से और जाड़े में शीत से मर जाती हैं।

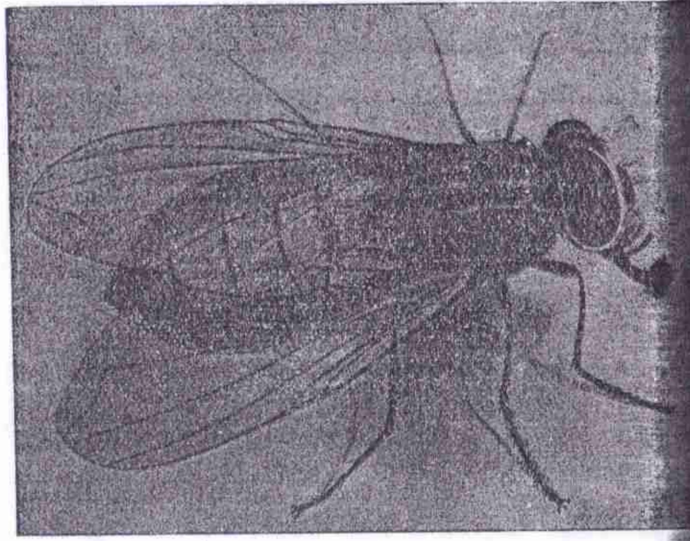

घर मक्खी

और सब कीटों की तरह मक्खी की आँख भी आश्चर्य-जनक होती है। यह अपने चारों ओर देख सकती है। इसीलिये इसका पकड़ना बड़ा कठिन होता है।

मनुष्य के साथ रहते रहते मक्खी चालाक हो गई है। दूसरे कीट पतंगों की तरह रात को यह रोशनी की ओर नहीं दौड़ती। दूसरे कीट पतङ्ग जब दिए की रोशनी को देखते हैं तो उसे दिन का उजाला समझ उस ओर दौड़ते हैं पर मक्खी ऐसा नहीं करती। अन्य पतंगों की तरह यह अपनी जान न देकर चुपचाप दीवाल पर बैठी रहती है। दिन के सूरज के उजाले और रात की दिए की रोशनी को यह अच्छी तरह से पहिचान गयी है।

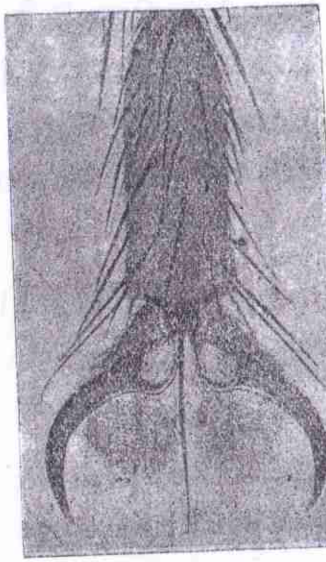

मक्खी के पैर

इसमें एक बड़ी अजीब बात होती है। यह ऊपर छत में पीठ को नीचे किये उल्टी बैठी रहती है। यह इसके पैरों की ख़ूबी है। वे ऐसे बने

होते हैं कि उनमें किसी भी चीज से चिमटने की
ताक़त होती है। इसी से मक्खी चाहे जहाँ और
चाहे जैसे चिमटी बैठी रहती है।

यह अक्सर देखा गया है जिन कीट पतंगों
में सूँघने और देखने की शक्ति अधिक होती है

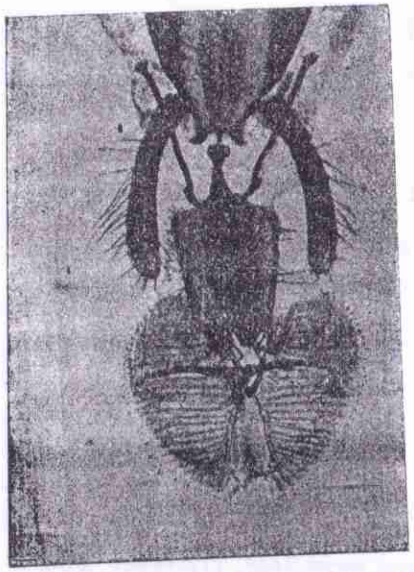

मक्खी की जबान

वे बहरे होते हैं
उनके कान नहीं
होते। यही हाल
मक्खी का है।
इसकी सूँघने और
देखने की शक्ति
तो बड़ी तेज़ है
परन्तु यह सुन
कुछ भी नहीं
सकती। किसी भी
तरह की आवाज़
का इस पर कोई
असर नहीं होता।

आदमी की अपेक्षा मक्खी अधिक ताकतवर

होती है। जितना बोझ यह उठा लेती है उसी
के हिसाब से यदि आदमी पर बोझ लाद दिया
जाय तो वह नहीं उठा सकता।

इसके मस्तक के आगे एक सूँड़ होती है
जिससे यह अपने आहार को चूसती है।

—राधाकृष्ण बी० ए०।

लल्ला का रोना

(१)

ब्याह करूँगी लल्ला तेरा।
चुप होजा कर कहना मेरा॥
पाएगा दुलहिन मन भाई।
खाले अपनी लाल मिठाई॥

(२)

ऊँच गाँव में दुलहिन तेरी।
कपड़े पहिन न कर अब देरी॥
ले जा गाड़ी उसे खिलाला।
मेरा लल्ला भोला भाला॥

(३)

दुलहिन क्या है पूरी परी।
सदा पहिनती साड़ी हरी॥
खाजा खुमों रोज बनाती।
गुड़िया लेकर रोज खिलाती॥

(४)

हँस हँस करती घर के काम।
रोने का न जानती नाम॥
तुम रोते हो अगर सुनेगी।
तो वह तुमको बहुत हँसेगी॥

(५)

चुप होजा ले अपना घोड़ा।
हुआ सबेरा थोड़ा थोड़ा॥
चहक रही हैं चिड़ियाँ प्यारी।
मानों हँसती तुझको सारी॥

(६)

मेरा लाल बड़ा राजा है।
हँसता है खाता खाजा है॥
और बजाता वह बाजा है।
बाहर चले हवा ताजा है॥

--देवीदत्त शुक्ल।

प्रातःकाल का व्यायाम

मैं हूं शक्ति-नरेश-कुमार।
मुझे न समझो 'शिशु' सुकुमार॥
प्रातः मेरा यह है काम—
बारह, रवि को करूँ प्रणाम॥
नरम-नरम यों किरणों डाल।
लाऊँ तन में तेज विशाल॥
ब्रह्मचर्य्य-व्रत मन में ठान।
ग्यारह करूँ 'दंड-हनुमान'॥
सोलह 'अंगद-बैठक' भरूँ।
पाँव सुदृढ़ मैं अपने करूँ॥
तिस-पीछे डम्बेल-अभ्यास।
कर, करता हूँ खेल-खलास॥
रोज़ खेलने जाऊँ शिकार।
खुश रहता हूँ यों 'शिशु' यार॥

—जीवेन्द्रनाथ बहादुरसिंह, राज-कुमार, शक्ति।

[आपका चित्र पहिले पेज में ही दिया हुआ है।]

हमारी चित्रावली

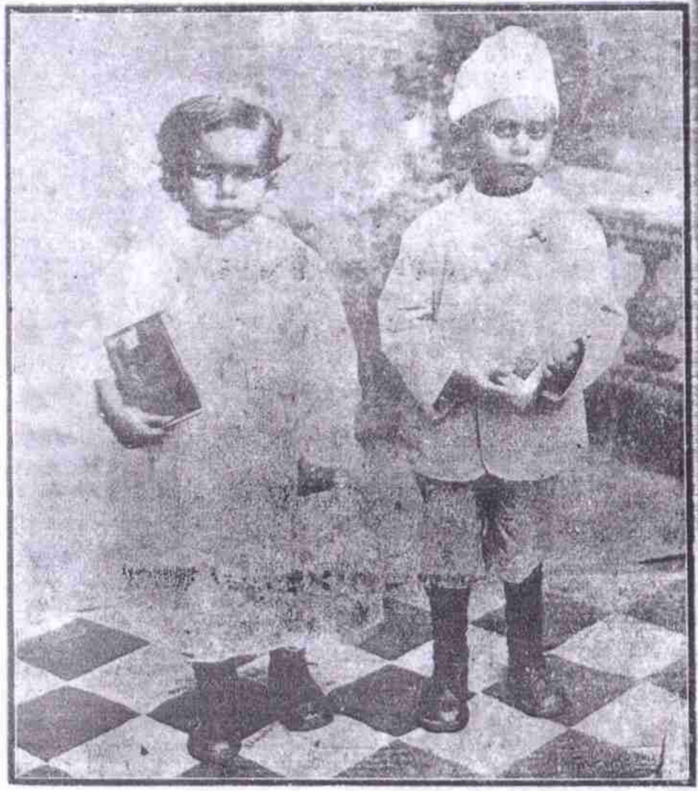

ब्रह्मदत्त और गायत्री देवी

[प्रेषक—पं० भवानी दयाल, प्रवासी भवन बहुआरा]

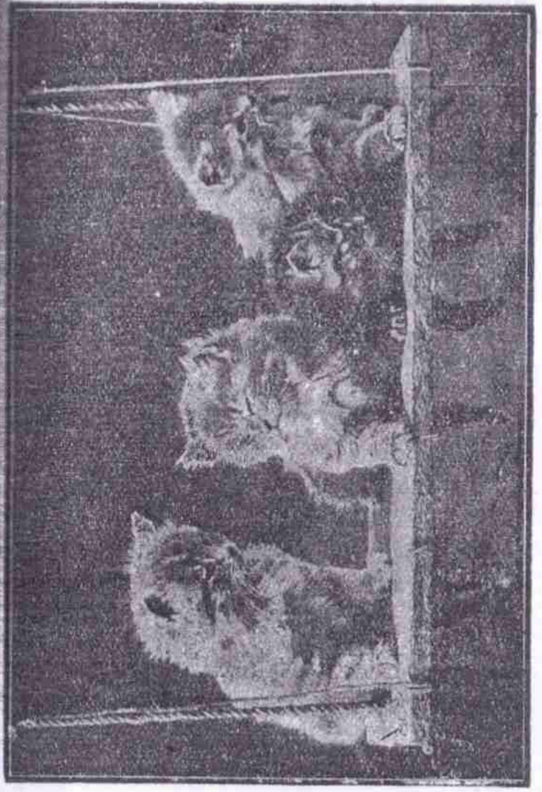

प्यारी बिल्ली झूल रही है, रोम फुला कर झूल रही है ॥

[प्रेषक—ए० पी० सक्सेना कटनी]

खेल तमाशा

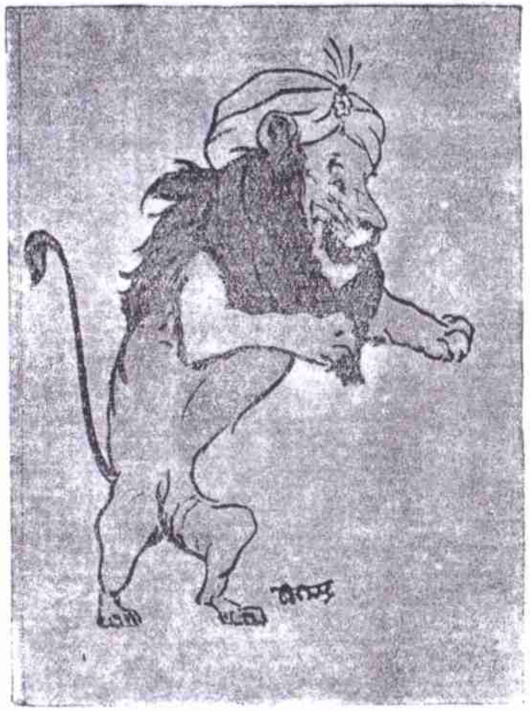

अगर मदरसे में आओगे।
सारा रोष भूल जाओगे॥

बालू में छिपा शहर

सहारा रेगिस्तान में बालू के भीतर दबे हुए एक बहुत पुराने शहर का पता लगा है जिसे रोमन लोगों ने आज से हज़ारों बरस पहिले बसाया था।

वहाँ के अरब लोगों में बहुत दिनों से यह विश्वास चला आता है कि सहारा में किसी जगह एक स्वर्ग तुल्य शहर है जिसमें संगमरमर के महल और मंदिर, खूबसूरत बगीचे और मन मोह लेने वाली मूर्त्तियाँ हैं, पर उसमें रहने वाले जादूगर हैं जो जब चाहे अपने शहर को लोगों की आँखों से छिपा सकते हैं। यह बात बहुत मशहूर थी मगर लोगों को इस पर विश्वास नहीं होता था।

आज से कोई अस्सी बरस पहिले कुछ फ्रांसीसी वैज्ञानिक ट्रिपोली से कोई सौ मील दूर सहारा में कुछ खोज करने गये। एकाएक बड़ा भारी बालू का तूफान आया जो इतना

भयानक था कि उनकी जान मुश्किल से बच सकी और माल असबाब सभी बालू में दब गया। मगर जब तूफान बन्द हुआ तो उन लोगों के ताज्जुब का कोई ठिकाना न रहा जब उन्होंने देखा कि उनके ठीक सामने ही बालू में से बहुत से संगमरमर के खम्भे, मूर्तियाँ, मन्दिरों और मकानों के सिरे दिखाई पड़ने लगे हैं। थोड़ी ही जाँच में मालूम हो गया कि इस जगह कोई बड़ा भारी शहर है जो बालू में दब गया था। तूफान से बालू हट गया है और कुछ शहर प्रगट हो गया है। उन लोगों ने बालू हटा कर दबे शहर को निकालना चाहा पर तुर्की सरकार ने इज़ाज़त न दी। लाचार हो वे उस जगह का नकशा बना कर लौट आए।

सन् १६११ में वह स्थान इटली के कब्जे में आया और तुरत वैज्ञानिक उस छिपे शहर का पता लगाने दौड़े। यद्यपि फिर उस स्थान पर बालू इकट्ठी हो रही थी पर फिर भी कुछ कुछ निशान बने हुए थे। खुदाई का काम शुरू किया गया ही था कि यूरोप में लड़ाई शुरू हो गयी

और काम रोक देना पड़ा। अब इतने दिनों के बाद फिर काम शुरू हुआ है और वहाँ बालू हटा हटा कर एक सुन्दर शहर निकाला जा रहा है।

पता लगा है कि रोमन लोगों के ज़माने में यह एक बहुत ही बड़ा और सम्पन्न नगर था। इसके चारो तरफ सैकड़ों मील तक खेती होती थी और हर साल लाखों मन गेहूँ और गल्ला बाहर जाता था। इतने हजार बरस बीतने पर भी अभी तक गेहूँ रखने के गोदाम ज्यों के त्यों बने मिल रहे हैं।

वैज्ञानिक इस शहर का नाम लेप्टिस मैग्ना कहते हैं। किस प्रकार यह बालू में दब गया इसका ठीक ठीक पता अभी तक नहीं लगा है। शायद आगे चल कर लगे; पर साधारण विचार यही है कि किसी भारी तूफान से यकायक रेगिस्तान का बालू यहाँ पर उड़ आया जिससे लोग अपना सब सामान छोड़ छोड़ एक दम भागने पर मजबूर हुए।

अब कुछ खुदाई हुई है। उसी से कितने ही महल, मन्दिर और बगीचे तथा सड़कें निकल आई हैं। बड़ी बड़ी रोमन कारीगरों के हाथ की सुन्दर मूर्तियाँ और तस्वीरें निकली हैं और आशा की जा रही है कि बहुत सा हीरे और सोने चाँदी का खजाना भी जरूर मिलेगा; क्यों कि इसी शहर में प्रसिद्ध धनी और बली सम्राट सेप्टिमियस सेवरस रहता था। उसके महल का एक हिस्सा भी निकल आया है। सब से बढ़ कर आशा उन कीमती किताबों और ग्रंथों के पाने की हो रही है जिनसे इन बादशाहों के महल भरे रहते थे। अगर उनका कोई भी पुस्तकालय मिल गया तो उस जमाने के इतिहास का पूरा पता लग जायगा।

एक विशेषता यहाँ यह भी है कि बालू ने सब चीजों की ऐसी रक्षा की है कि जो कुछ सामान मूर्तियाँ, चित्र, बरतन तथा अन्य चीजें निकली हैं वे ऐसी दुरुस्त और ठीक हालत में हैं जैसे कल ही की बनी हों। कहीं से किसी तरह

की खराबी नहीं आई है। आशा की जाती है कि शीघ्र ही इसके विषय में और हाल मालूम होगा।

—मा० जी॥

चूरन का लटका

चूरना चटनी और अचार।
एक चीज़ में तीन बहार॥
मुह से सी सी गिरती लार।
आँख नाक से बहती धार॥
बड़ा मज़ा है बड़ा मज़ा॥

मिर्च खटाई की भर मार।
किया नमक से यह तैयार॥
सड़ी गली चीज़ों का सार।
बीमारी का ठेकेदार॥

बड़ा मज़ा है बड़ा मज़ा॥

पैसे से जो हो लाचार।
लाओ पहिले माँग उधार॥
जाता हूँ दिल्ली दरबार।
क्या मैं आता बारम्बार॥

बड़ा मजा है बड़ा मजा।

—विद्याभूषण 'विभु,।

सेना पति हनीबल

कार्थेज का हनीबल बड़ा प्रसिद्ध सेनापति हो गया है। उसने रोमन लोगों के दाँत खट्टे कर दिए थे। इस वीर का सब से बड़ा काम आल्प्स की पहाड़ियों को पार करना था। आल्प्स को पार करना कोई सरल कार्य्य नहीं है। इस पर्वत श्रेणी की तुलना हम हिमालय से कर सकते हैं यद्यपि हिमालय बहुत ऊँचा है। इसे पार करते समय हनीबल एक घाटी में फँस गया। चारों ओर रोम की सेना घेरे पड़ी थी।

सिपाहियों के मुँह सूख गये कि अब रक्षा नहीं हो सकती। हनीबल ने कहा—"कुछ परवाह नहीं, रात हो जाने दो।"

जब हुई रात तो हनीबल ने २००० बैलों के सींगों में मशाले जलवा कर उन्हें हाँक दिया। रोमन लोग समझे कि उनके शत्रु भागे जा रहे हैं। उन्होंने बैलों का पीछा किया।

अब तो हनीबल के सामने साफ रास्ता था। वह घाटी से निकल गया। इस बुद्धि का कुछ ठिकाना है!

—विश्व प्रकाश विशारद।

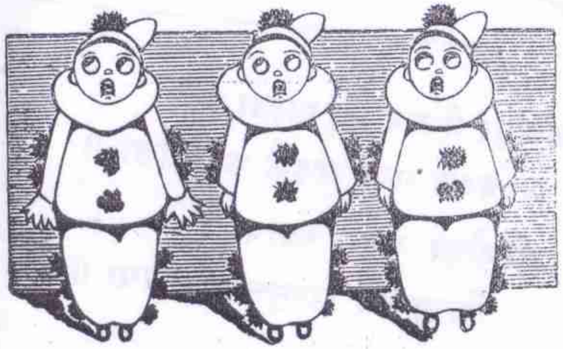

सिंह और घड़ियाल

धीरे धीरे नदी किनारे।
कुरता पहने बाल सँवारे॥
टोपी दिए लगाए छाता।
चला एक लड़का था जाता॥

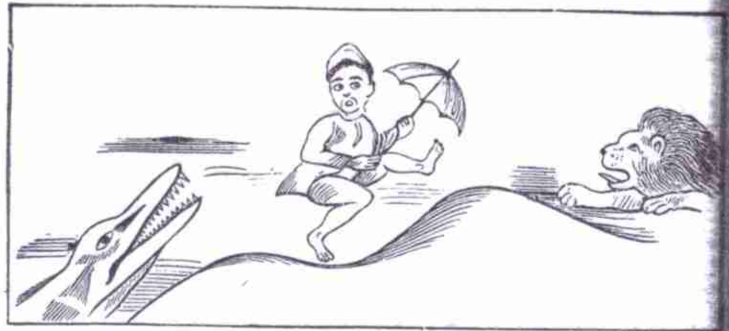

निकल मगर ने जब मुँह खोला।
बदल गया लड़के का चोला॥
फिर भी दौड़ा कदम बढ़ाया।
किन्तु शेर सन्मुख से आया॥

बैठ गया वह मारे डर के।
आड़ खुले छाते की कर के॥

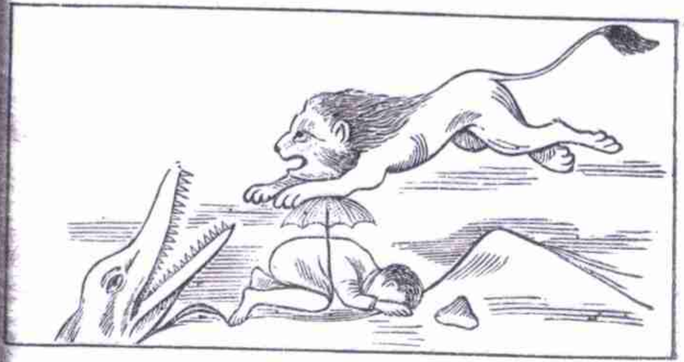

शेर मगर के मुँह में आया।
यों लड़के ने प्रान बचाया॥

फटा मगर का मुँह जाता है।
शेर न बाहर आ पाता है॥

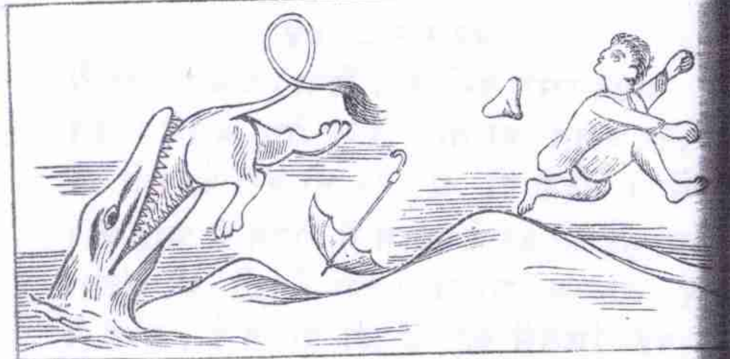

लड़का दौड़ लगाता है अब।
भूल रहा टोपी छाता सब॥

—'बालक कवि'

अंगूठी का जादू

बालको! लो एक नया जादू का खेल सीखो। यह अँगूठी का एक बड़ा सुन्दर खेल है। इससे यह जाना जाता है कि कौन सा आदमी अपने किस हाथ की किस उँगली में अँगूठी पहिने हुए हैं।

अपने किसी मित्र को बुला लो। उससे कहो कि आज मैं तुम्हें एक जादू का तमाशा दिखाऊँगा। यह कह कर उसे कागज़ पेंसिल दे दो और समझा दो कि जैसे जैसे तुम कहते जाओ वैसे ही वैसे वह लिखता जाय। उसे यह सब इस प्रकार लिखना चाहिए कि जो कुछ वह लिखे तुम्हें न दिखाई दे।

अब उस आदमी को जो अँगूठी पहिने हुए है कई और आदमियों के साथ एक लाइन में अपने मित्र से खड़ा करवा दो। पर तुम्हें यह न मालूम होना चाहिए कि वह आदमी कौन है? अब अपने मित्र से कहो कि वह उस लाइन के आदमियों को गिने और जो संख्या उस आदमी

की उस लाइन में हो उसे २ से गुणा करदे। गुणन फल में ३ जोड़ कर इसे फिर ५ से गुणा करदे। ५ से गुणा करने के बाद जो गुणन फल आवे उसमें ६ और जोड़ दे। इस जोड़ को १० से फिर गुणा करे। इस प्रकार जो गुणन फल आवे उसमें उस उँगली की संख्या जिसमें आदमी ने अँगूठी पहिर रखी है जोड़ दे। इस जोड़ में २ और जोड़ कर जो कुछ फल आवे उसे तुम्हें बता दे।

अब तुम्हें कुछ नहीं करना है। केवल बताई हुई संख्या में से २२२ घटा देना है। २२२ घटाने पर तुम्हें उस लाइन में उस आदमी की संख्या, किस हाथ की किस उँगली में वह अँगूठी पहिने है मालूम हो जावेगा।

मान लो तुम्हारे मित्र ने बीस मनुष्यों की लाइन बना कर उसमें अँगूठी पहिने हुए आदमी को खड़ा कर दिया। गिनने पर वह उस लाइन में सोलहवाँ आदमी निकला। तो उसे इस प्रकार करना चाहिए—

१६ × २ = ३२

३२ + ३ = ३५

३५ × ५ = १७५

१७५ + ६ = १८४

१८४ × १० = १८४०

१८४० + ४ = १८४४

१८४४ + २ = १८४६

१८४६ उसने तुम्हें बता दिया। अब तुम इसमें से २२२ घटाते हो तो १६२४ शेष बचेंगे। अब इसमें से पहिले दो अङ्क १६ तो उस आदमी की संख्या हुई जो उसके लाइन में गिनने से आई थी। और अन्तिम संख्या ४ उस उँगली की संख्या हो गई जिसमें वह अँगूठी पहिने है। बीच में यदि २ बचे तो बायाँ हाथ और १ बच्चे तो दहिना हाथ समझना चाहिए। यहाँ बीच में २ बचा है तो वह बाएँ हाथ में अगूँठी पहिने है।

अब तुम मन ही मन सोच कर उसे उत्तर दे सकते हो कि सोलहवाँ मनुष्य बाएँ हाथ की चौथी उँगली में अँगूठी पहिने है। कहो कैसा सुन्दर जादू है!

—अमृत लाल मुकरजी।

मधु मक्खी

मधु मक्खी है सब को भाती ।
मेहनत करना सदा सिखाती ॥
सिर्फ घास पत्ती है खाती ।
फूलों से मधु भर भर लाती ॥

जोड़ जोड़ रखती मधु थाती ।
सार ग्रहण करना सिखलाती ॥
सब से मिल जुल छत्ता बनाती ।
आजादी के गीत सुनाती ॥

बिना काम के पास न आती ।
पकड़ो तो जल्दी उड़ जाती ॥
बिना सताए नहीं सताती ।
निज रक्षा की रीति बताती ॥

—गुलाबराय एम० ए०

———

तिलकाष्ट महिषबन्धन

बहुत दिनों की बात है एक समय बादशाह के दरबार में पण्डित विद्यासागर आये।

विद्यासागर बड़े विद्वान थे। इनकी योग्यता से दरबार के सब विद्वान बहुत घबराये। उन्हें यह डर होगया कि कहीं यह हम सब को निकलवा न दे। इसलिये उन्होंने राम नामक दरबारी से विद्यासागर को किसी तरह वहाँ से निकलवा देने की प्रार्थना की।

यह दरबारी बड़ा चतुर था। बड़ों बड़ों की दाल इसके आगे नहीं गलती थी। इसने कहा—आप लोग न डरिये। मैं किसी तरकीब से उस पर विजय पाऊँगा और उसे यहाँ से निकलवा कर आप लोगों के भय को दूर करूँगा।

दूसरे दिन किसी चीज को एक कपड़े में लपेट कर वह विद्यासागर के घर पहुँचा।

बात चीत करते करते विद्यासागर ने पूँछा—यह क्या है ?

राम ने उत्तर दिया—यह वही विख्यात

तिलकाष्टमहिषबन्धन है। इसके विषय में आप क्या जानते हैं? बतलाइए।

यह सुन कर पण्डित जी सोचने लगे कि अपनी जिन्दगी में तिलकाष्टमहिषबन्धन का नाम भी मैंने कभी नहीं सुना। यह क्या बला है?

"सब शास्त्र और पुराण पढ़ डालने पर भी इस पर आप कुछ नहीं बता सकते," राम ने थोड़ी देर बाद कहा। विद्यासागर ने सोचा की शायद राम उनसे भी अधिक समझदार और विद्वान है। इस लिये उन्होंने राम से कहा, "मैं कल इसके विषय में आपको बताऊँगा।"

राम फिर कुछ देर तक इधर उधर की बातें करके घर लौटा। विद्यासागर उस गट्ठर को लेकर बहुत देर तक उस पर विचार करते रहे। परन्तु उनकी समझ में कुछ भी न आया। आखिरकार शरमिन्दा होकर उन्होंने यह सोचा कि अगर मैं दरबार में इसे बिना समझे हुए जाऊँगा तो जरूर सब दरबारी मेरी हँसी उड़ा कर मेरा अपमान करेंगे।

यह सोचकर विद्यासागर डर के मारे शहर से भाग निकले। बादशाह को जब यह मालूम हुआ तो उसने राम से विद्यासार के भाग जाने का कारण पूछा। राम ने उस गट्ठर को दिखाते हुए कहा—इस 'तिलकाष्टमहिषबन्धन' ने उसको धोखा दिया।

बादशाह ने उस गट्ठर को खोल कर देखा और पूछा—"यह सब क्या है?"

उसमें तिल लकड़ी और भैंस का चमड़ा था।

राम ने हँस कर कहा, "महाराज! यही 'तिलकाष्टमहिष बंधन' है। तिल को तिल कहते है, लकड़ी को काष्ट कहते हैं और भैंस को महिष कहते हैं, गट्ठर को बंधन कहते हैं। इस प्रकार सब मिलकर, 'तिलकाष्टमहिष बंधन' हो गया।

यह सुन कर दरबारी लोग हँसने लगे, और राम की चतुरता को सुन कर उसकी बहुत प्रशंसा की।

—जे० कृष्णमूर्ति।

क्रोध

दुनियाँ का है पूरा दुश्मन, ।
करता है तू बे-काबू मन ॥
प्राणी को तू भड़काता है ।
मार पीट तू करवाता है ॥

तू है फूट परस्पर करता ।
प्रेम, मित्रता का है हरता ॥
वश में करता बुद्धि-हीन को ।
व्यर्थ सताता सदा दीन को ॥

ताकतवर से जोर न चलता ।
तब तू है मन ही मन जलता ॥
कभी न वश सज्जन को करता ।
मन दुर्जन का है तू हरता ॥

तेरे कारण दुःख मिले हैं ।
दुष्ट नरों के हृदय खिले हैं ॥
तेरे कारण नाश हुआ है ।
लोगों का बल ह्रास हुआ है ॥

तेरे कारण मेल नहीं है ।
तुझसा बैरी नहीं कहीं है ॥
मोह लोभ मद तेरे नौकर ।
चलते हैं तेरी आज्ञा पर ॥
दुष्टों का तू है सिरमौर ।
तुझसा होगा कहीं न और ॥
महिमा तेरी अपरम्पार ॥
है विपत्तियों का तू द्वार ॥

—रामेश्वर प्रसाद गुरु।

चुटकुले

माँ—पढ़ने गया था ?
बालक—पढ़ाने गया था ।
माँ—किसको ?
बालक—अपनी गुड़िया को ।

❁ ❁ ❁ ❁

एक फ़कीर ने सुबह उठकर यह विनती की—
"हे परवरदिगार ! अगर मुझे आज एक रुपया मिले तो मैं दो आने की सिन्नी बाँटूँ ।"

आगे चलकर उसे कपड़े में बँधी हुई कोई चीज़ दिखाई दी। उसने उसे उठाकर देखा तो उसमें चौदह आने पैसे बँधे थे। १४ आना पैसे को देखकर फ़क़ीर बोल उठा, "अल्ला मियाँ! तुम बड़े सयाने हो। दो आने पहिले ही से काट लिये। ज़रा सब्र न किया गया।"

--ज्ञान चन्द्र शुक्ल।

❀ ❀ ❀ ❀

किसी शहर में तीन मूर्ख लड़के रहते थे उन्होंने एक दिन एक मीनार देखा। मीनार की उँचाई देख कर बड़े आश्चर्य में हो गये। एक ने कहा कि पहिले ज़माने में कैसे लम्बे लम्बे राजगीर होते थे जो इस मीनार की उँचाई तक पहुच गये। दूसरे ने कहा तू बड़ा नादान है। क्या इसको हर एक बना सकता है? पहिले यह ज़मीन पर लेटाकर बनाया गया है फिर सीधा करके खड़ा कर दिया है। तीसरा जो सब से मूर्ख था बोला कि तुम दोनों बड़े नादान हो यह पहिले कुआँ था। जब यह उलट दिया गया तो मीनार होगया।

--गिरजापति राम गुप्त

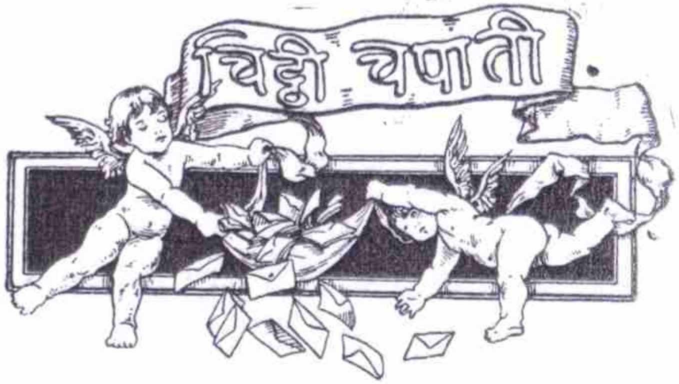

[हमारे पास हर महीने बालकों की कुछ ऐसी चिट्ठियाँ आती रहती हैं जिनके पढ़ने में बड़ा मजा आता है। ये ही चिट्ठियाँ इस कालम में पाठकों के मनोरञ्जन के लिये छापी जाती हैं। बालक चिट्ठी खूब सोच समझ कर लिखें, क्योंकि चिट्ठियाँ बिलकुल ज्यों की त्यों छापी जाती हैं। कोई भूल होगी तो लोग उन्हीं की हँसी उड़ावेंगे।

- 'शिशु'-सम्पादक।]

(१)

श्रीमान् सम्पादक जी

सादर नमस्ते!

मैं क्या लिखूँ? बड़ी देर से सोच रहा हूँ पर मेरी समझ ही में नहीं आता कि क्या लिखूँ?

मुझे छोटे २ शिशुओं की चिट्ठी बड़ी अच्छी लगती है तो जी चाहता है कि मैं वैसी ही तोतली बोली में छम्पादक दी लिखूँ ।

आपका शिशु

श्री० शान्तिस्वरुप बिजनौर,

[दलूल लिथिए, दलूल]

(२)

श्रीमान सम्पादक जी,

मुझे चैन नहीं पड़ता हर वक्त मन में यही कहता रहता हूँ कि रेल ठाकुरद्वारा कब आयगी इसलिए कृपा करके बता दीजिये कि रेल कब निकलेगी ।

शिशू का ग्राहक

श्रीराम, ठाकुरद्वारा

[जब आप निकालेंगे]

(३)

श्री मान सम्पादक जी,

नमस्ते

इस दफा मैं शिशू देखने के लिए बड़ी उत्सुक हो रही थी क्यों की मुझे उमींद थी की मेरी

चिट्ठी छपेगी सो जिस वकत शिशु आया तो मैं खुसी के मारे खूब कूदी और झट पट खोल कर पढ़ना शूरु किया मगर मैं अपनी चिट्ठी न देख कर बड़ी निराश हुई कृपा करके आप मेरी चिट्ठी जरुर शिशु में छापें मैं आप से एक बात पूछ ती हूं कि मेरी एक जुराब तो फट जाती है और एक नई की नई रहती इस का क्या उपाए करना चाहिये ।

आप की पुत्री

कुमारी विमला, स्याल

[जिस पैर की जुराब फट जाती है उसको ऊपर उठा कर चला कीजिए, वह भी नई की नई बनी रहेगी]

(४)

प्रिय सम्पादक जी नमस्ते

मैं आप को पहली बार चिट्ठी लिखा रही हूँ आशा है कि आप मुझे पहली बार ही नराज न करेंगे समय यह है कि हम दो बहिन भाई हैं और हमारे पास एक टराई सिकल है मेरा भ्राता जो पाँच साल का है न तो आप ही चढ़ता है न मुझे ही चढ़ने देता है जब मेरा शिशु आता

है तो फाड़ देता है आप क्रिपा कर के बतलावें कि मैं उसका क्या इलाज करूँ ?

आप की
बिमला देवी

[सब से अच्छा तो यही होगा कि आप टराई सिकल हमारे पास भेजदें। सारा झगड़ा दूर हो जायगा।]

(५)

श्री सम्पादक जी नमस्ते

एक दवा मैं आप को बतलाता हूँ जब मुझे नीद नहीं आती तो मेरी चाची मेरे सिर पर हाथ रखकर थपक कर कहती है कि दो कुत्ते दो बिल्ली मुन्ने को ब्याऊँ दूर दिल्ली बस फिर मुझे चट नींद आजाती है सो आप यह दवा शिशू में छाप कर वेष दीजीयेगा।

आपका—
रमेश, मेरठ।

[भाई दवा तो बड़ी अच्छी है, पर कहीं पढ़ते ही नींद न आ जाय]

(६)

श्री सम्पादक जी

आप का शिशु आया परन्तु मेरा छोटा भाई

उसको छुड़ाता है और यदि मैं उसे तसबीरे बताती हूँ तो वह उन्हे फाड़ता है पढ़ना भी वह नहीं जानता है आप मुझे कोई रीति बतादे जिससे शिशु खराब नहीं हो। उसका नाम चन्द्र मौलिरत्न है।

आप की पुत्री
शान्ती।

[आप 'शिशु' में मिर्च लगा कर रखा कीजिए]

(७)

श्रीमान् सम्पादक जी ! प्रणाम

मुझे छाछ (मट्ठा) का नाम सुनते ही उल्टी क़ै-होने लगती है तथा ज्वर भी आ जाता है। सो कोई ऐसी दवा बतलाइये ताकि छाछ पीने में आनन्द आवे। यदि नहीं बतलायेंगे तो गो लोक में आप को इस जिमेवार होना पड़ेगा। क्यों कि यह गौ के दूध से होता है। फिर आप की मर्जी।

आप का—
पुरुषोत्तम दास स्वामी

[छाछ में ईख का रस मिलाकर पिओ, बड़ा मज़ा आएगा

(८)

श्रीमान् सम्पादक जी नमस्ते

आप का शिशु बहुत राह दिखता और महीनो सोता है। जुलाई से सोया हुआ अब सितम्बर में जागा जिससे हमारी एक दावत मारी गई। जुलाई का नै नम्बर की चिट्ठी में जो रत्न कुँवरि की ताई कीं बरसी का नोता था सब के बदले आप ने ही खाया।

आप की बेटी पुशपावती

[तुम्हारा परोसा अभी तक रक्खा है। जाकर जल्दी ही ले लो।]

(९)

सम्पादक जी

मेरे बाबा बहुत बुढे नौर बहरे होगये हैं और उनके चार पाई मे बहुत से खटमल थे और उनको रात में बड़ी तक लीफ होती है इसलिये आप ऐसा उपाय बताइये कि सब खटमल भाग जायँ। आप का

अबुल कलाम

[चारपाई को गरम पानी में उबाल डालिए]

अनोखी बातें

रोटी से सफाई

आप को सुन के आश्चर्य होगा, कि ताजी रोटियें लगभग सभी प्रसिद्ध घड़ी के कारखानों में घड़ियों के पुर्जे साफ करने में इस्तेमाल की जाती हैं।

ताजी रोटियें गूँध के आटा बना ली जाती हैं। घड़ियों के नाज़ुक और महीन पुर्जों में बनते वक्त तेल और मैल लग जाता है। यह आटा इस तेल और मैल को साफ करने में इस्तेमाल किया जाता है। मैल इस आटे में चिपक जाता है और तेल इसमें सूख जाता है।

इस आटे के सिवाय और कोई चीज अभी तक ऐसी नहीं दिखाई पड़ी है जो ऐसी अच्छी तरह पुर्जों को साफ करदे और फिर उन पर स्वयं अपने कण भी न छोड़े।

अजायब घर का भोजन।

लंदन के अजायब घर में रहने वाले जानवरों आदि को खिलाने में प्रति वर्ष १८०००० रुपया

खर्च होता है। केवल १५००० का तो पानी ही खर्च होता है।

सन् १९२४ में ५९४० मन घोड़े का मांस खर्च हुआ, १२० मन काड मछली, और इनके सिवाय हजारों मन माँस तथा दूसरी खाने की चीजें खर्च हुई। जानवरों को फल भी खिलाए जाते हैं। सन् १९२४ में कथीर ५० मन अंगूर और २१३०८५ केले भी खर्च हुये थे।

उसी साल १३८४१७० रुपये अजायब घर के दर्वाजे पर दर्शकों से वसूल हुये। २०५७१४३ दर्शक अजायब घर में उस साल आये।

❀ ❀ ❀

दुनिया में सब से छोटी डिक्शनरी एक तावीज में है जिसमें १५००० शब्द हैं। यह एक इञ्च का आठवाँ हिस्सा लम्बी हैं, पौन इञ्च चौड़ी है और एक इञ्च का सोलहवाँ हिस्सा मोटी है।

बाल-समाचार

[यहाँ केवल वे समाचार छापे जाते हैं जो हमारे छोटे पाठक चारों तरफ से भेजा करते हैं —शिशु सं०]

—शान्तिस्वरुप (बिजनौर) का छोटा भाई बड़ा बदमाश होता जाता है। उसने तीन किताबें फाड़ डाली हैं और पढ़ा एक अक्षर भी नहीं।

—सतगुरु शरण (आगरा) का पत्थर का ताजमहल टूट गया है। बेचारे बड़े परेशान हैं। गोंद से जोड़ते हैं फिर भी नहीं जुड़ता।

—शिवराम बहादुर (सहारनपुर) के घर में बिजली लग गई है। वे यह जानना चाहते हैं कि बिजली जलती कैसे है ?

—रामरच पाल (नजीबाबाद) ने एक ऐसी चुहिया देखी है जो आधी सफेद और आधी काली थी। इससे उन्हें बड़ा अचम्भा हो रहा है।

—बलिया से बद्री नारायण लिखते हैं कि मेरा नाम बद्री नारायण होते हुए भी लोग मेरी पूजा नहीं करते। बताइए क्या किया जाय।

—शाहजहाँपुर के रतनपाल चन्द्र तोतली बोली से बहुत चिढ़ते हैं। यहाँ तक कि जब उनकी छोटी बहिन तोतली बोली बोलती है तो वे कान में उँगली दे लेते हैं

—कमला देवी (लाहौर) से और उनके छोटे भाई से लड़ाई हो गयी है। उनके छोटे भाई ने उनकी सबसे बड़ी गुड़िया का दाहिना हाथ काट कर कहीं छिपा दिया है। बताता नहीं है।

—सागर के विनोदी लाल १२ बरस के हो गए हैं परन्तु अभी वे धोती पहिनना नहीं जानते।

—बनारस से श्री कान्त लिखते हैं कि उनके पड़ोस में एक पण्डा रहता है। उसने जब से जूलाई के 'शिशु' में भालू महाराज की तस्वीर देखी है—वह 'शिशु'-सम्पादक से बहुत चिढ़ने लगा है।

—पटना में रामलाल वर्मा के यहाँ एक कुतिया ने तीन बड़े सुन्दर बच्चे दिए हैं। एक काला, एक भूरा और एक मटमैला सा है; परन्तु कान और पूछ तीनों की बिलकुल सफेद हैं।

———

नई पहेलियाँ

(१)

आँख नहीं हैं हाथ नहीं है
नहीं कान नहिं पैर।
हवा खिलाती रहती सब को
करूँ जगत की सैर॥

(२)

रोज सुबह को आता हूँ मैं,
और शाम को जाता हूँ।
चीज़ दिखाता तरह तरह की,
सब को सुबह उठाता हूँ॥

(३)

रोज शाम को आता हूं मैं।
और सुबह को जाता हूँ॥
सब चीज़ों को मैं ढक लेता।
सब को खूब सुलाता हूँ॥

(४)

एक ग्वाले के पास तीन बरतन हैं। वे क्रम

से १०, ७ और ३ सेर के हैं। उनमें से १० सेर वाला बर्तन दूध से भरा है। ७ और ३ सेर वाले दोनों बर्तन खाली हैं। बताओ अगर वह किसी को १ सेर दूध देना चाहे तो किस तरह देगा।

(५)

सिर में रहने पर भी मैं हूँ,
पड़ा पैर में हे भगवान।
य र ल व तक पढ़ने ही,
मुझे सभी लेते पहिचान॥

(६)

एक आदमी ने अपने बेटे से पूँछा कि तेरी क्या उम्र है? लड़के ने जवाब दिया कि अबसे २० वर्ष पहिले जितनी आपकी उम्र थी उतनी ही मेरी अबसे ५ वर्ष में हो जावेगी। यदि बाप और बेटे की उम्रों का जोड़ इस समय ६५ हो तो बेटे की उम्र बताओ।

शिव

—हरिदत्त शर्मा।

सूचना—ऊपर की ६ पहेलियों में से जिन बालकों के उत्तर ठीक होंगे उनमें से तीन को पुरस्कार मिलेगा और बाकी बालकों के नाम छपेंगे।

—— ——

पिछली पहेलियों के उत्तर

(१) कलम। (२) पान। (३) ल

निम्न लिखित दो बालकों को पुरस्कार मिला—

(१) जगदीश सहाय, बाँदा।
(२) रत्नपाल चन्द्र जैन, शाहजहाँपुर।

अन्य उत्तर प्रेषक—

कस्तूर चन्द टोंग्या, हाट पीपला।
कामेश्वर प्रसाद, बलिया।
लल्लू कौशल किशोर भार्गव, किसनगढ़।
चाँद मल महेश्वरी, रतलाम।
बैजनाथ कपूर, बनारस।
श्याम बिहारी बजापेयी, जबलपुर।
केदार नाथ अग्रवाल, प्रयाग।
वीरेन्द्र कुमारसिंह बाँदा।
विठ्ठल दास गोकुलदास, अर्वी।
हरिश्चन्द्र माथुर, गोरखपुर।
शिवकुमार, बलिया।
बद्री नारायण, बलिया।
गोपाल राम, बलिया।
पुष्पावती, सकीट।
कृष्ण कुमारी, मैहर।
जगदीशचन्द्र माथुर, खुर्जा।

विश्वम्भर दास खत्री, गोंदिया।
शेषमल चौथमल विद्यार्थी, कुकरेश्वर।
मदन लाल श्रेष्ठ, रक्सौल।
अहमद याकूब जी, कुकरेश्वर।
शरीफ़ अहमद, कुकरेश्वर।
शिवनन्द प्रसाद, ताजपुर।
अजर दास आनन्द दास, रायपुर।
सुशीला बाई, सिवनी।
विद्यार्थी श्रीभक्त दास, दामाखेरा।
राजेश्वर प्रसाद भार्गव, सिवनी।
बालमुकुन्द गुप्त, इन्दौर।
राम प्रसाद कुर्मी, रहटगाँव।
पारवती देवी, देहरादून।
रामेश्वरी देवी, श्री नगर।
बटुक देव पति, बरार।
भुवन पाल सिंह, रायपुर।
सत्यवती देवी, होशंगाबाद।
ललता प्रसाद वर्मा, स्टेट।
परमानन्द रामलाल राठी, गरोठ
भारतभूषण, लाहौर।
राजेन्द्रप्रसाद सिंह, दरभङ्गा।
राजेश्वर सहाय माथुर, गोरखपुर।
फतेहचन्द सरावगी, मौलमीन।

कौन नहीं जानता ?

हिन्दी में स्त्रियों की सब से अच्छी, सबसे सस्ती और सचित्र मासिक पत्रिका

गृहलक्ष्मी

सत्रह वर्षों से स्त्री-शिक्षा का प्रचार कर रही है। वार्षिक मूल्य ३) रु० है। आज ही ।=) का टिकट भेज नमूना मँगा देखिये।

श्रीमती गोपालदेवी,
'गृहलक्ष्मी'—कार्य्यालय,
इलाहाबाद।

हँसी-खेल

[ले० पं० सुदर्शनाचार्य्य बी० ए०]

इस पुस्तक में बालक-बालिकाओं के लिये 'हँसी खेल' का पूरा सामान है। इसी से इसका नाम 'हँसी खेल' रक्खा गया है। इसमें रङ्ग विरङ्गे ८२ चित्रों से चित्रित छोटे छोटे ६० लेख और कविताएँ हैं। सभी विषय हँसाने वाले हैं। बालक इनको पढ़ कर हँसते हँसते लोट पोट हो जायँगे। बालक एक बार देख कर बालक फिर इसे नहीं छोड़ते। इसका कवर भी बड़ा सुन्दर है। मूल्य केवल बारह आना है। 'शिशु' के ग्रहकों से नौ आना।

आवश्यकता है

—— :o: ——

"शिशु" का प्रचार करने के लिए प्रत्येक नगर में एजेण्टों की आवश्यकता है। इस लिए जो लोग "शिशु" की एजेन्सी लेना चाहें उन्हें शीघ्र ही कार्य्यालय से लिखा पढ़ी करनी चाहिए।

एजेण्टों को कमीशन भी भरपूर दिया जायगा।

पत्र व्यवहार का पता—
मैनेजर "शिशु"
इलाहाबाद।

मुद्रक तथा प्रकाशक–पं० सुदर्शनाचार्य्य बी० ए० सुदर्शन प्रेस, प्रयाग।

बालक-बालिकाओं के लिए

उत्तमोत्तम पुस्तकें

बाल-कवितावली

[ले०—ठाकुर श्रीनाथ सिंह]

इस पुस्तक में शिशुओं के पढ़ने योग्य ११२ शिक्षाप्रद और मनोरञ्जक कविताएँ हैं। यह पुस्तक भी ऐसी है कि बच्चे इसको पाकर नहीं छोड़ते। बड़े प्रेम से बार बार पढ़ते हैं। यहाँ तक कि पढ़ते पढ़ते इसकी कविताओं को रट डालते हैं। बालकों के लिये हिन्दी में अभी तक कोई भी पुस्तक ऐसी नहीं है। मूल्य केवल एक रुपया। 'शिशु' के ग्राहको से बारह आना।

परियों का देश

[ले०—श्रीमती गोपाल देवी]

इस पुस्तक में परियों की २८ मनोरञ्जक कहानियाँ हैं। एक बार हाथ में लेकर बालक फिर इसे बिना खतम किये नहीं छोड़ते। बालकों में पढ़ने का शौक पैदा करने के लिए यह अपूर्व पुस्तक है। मूल्य एक रुपया। 'शिशु' के ग्राहकों से बारह आना। मँगाने का पता—

मैनेजर, 'शिशु' इलाहाबाद।